Department of Sociology

Programme outcome

B.A.

1. विद्यार्थियों को समाजशास्त्र विषय के उद्‌भव, विकास एवं समाजशास्त्र के मौलिक अवधारणाओं से परिचित कराना।
2. भारतीय समाज के परम्परागत तथा समकालीन सामाजिक संरचना एवं समस्याओं का ज्ञान प्रदान करना।
3. जनजाति समाज का वृहद विश्लेषण तथा छ.ग. की प्रमुख जनजाति का विशिष्ट अध्ययन।
4. सामाजिक अनुसंधान की पद्वतियों का ज्ञान।

M.A.

1. परंपरागत व आधुनिक समाजशास्त्रीय विचारकों के विचारों से परिचित कराना।
2. सामाजिक अनुसंधान की अवधारणा की व्याख्या।
3. समाजशास्त्र का ग्रामीण भारत, विकास व उद्योग के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
4. समाज व अपराध के मध्य संबंधों की व्याख्या।

Programme specific outcome

B.A.

1. समाज की संरचना एवं प्रक्रियाओं को समझने का अवसर प्रदान करता है।
2. सामाजिक जीवन, सामाजिक संगठनों एवं सामाजिक न्याय को समझने में सहायक है।
3. समाज में नवीन परिवर्तनों के प्रतिमान एवं उनके कारणों का ज्ञान प्रदान करता है।
4. जनजाति जीवन एवं संस्कृति के ज्ञान में उपयोगी है।
5. समाजशास्त्रियों द्वारा विकसित सामाजिक अनुसंधान की पद्वतियों उपकरणों एवं प्रक्रिया को समझने तथा उनके सामाजिक विषयों के अध्ययन करने में सक्षम बनाता है।

M.A.

1. समाजशास्त्रीय विचारकों के समाज के परिप्रेक्ष्य में विचारों का विश्लेषण करना।
2. सामाजिक समस्याओं के निराकरण, विकास नीति व योजना निर्मा ण में सामाजिक शोध–अनुसंधान की भूमिका का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण भारत, औद्योगिक विकास के परिप्रेक्ष्य में समाजशास्त्र के व्यवहारिक व सैद्वांतिक पक्षों के अनुरूप अध्ययन करना।
4. समाज व अपराध किस प्रकार एक दूसरे से प्रभावित होते है इस संबंध में विश्लेषण करना।

Course outcome

बी.ए.–1

1. समाज में परिवर्तनों के कारण व प्रभावों का ज्ञान।
2. व्यवहारिक समाजशास्त्र के माध्यम से ग्रामीण पुननिर्माण, जनजातीय कल्याण, सामाजिक समस्याओं के निराकरण में सहायक।
3. समाजशास़्त्रीय विषयों पर अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त होना।

बी.ए.–2

1. प्राचीन भारतीय समाज के वर्ण व्यवस्था आश्रम व्यवस्था, कर्म व धर्म सिद्वांत के द्वारा वर्तमान भारतीय समाज का तुलनात्मक अध्ययन संभव हो पाया।
2. जनजातियों, दलित वर्ग, अल्पसंख्यक व महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार के प्रयास व कार्यक्रमों का मूल्यांकन।
3. आधुनिक समाज के प्रमुख अपराध जैसे श्वेतवसन अपराध, संगठित अपराध का अध्ययन।

4. दंड की अवधारणा तथा आधुनिक सुधारात्मक संस्थाओं जैसे पेरोल, बाल न्यायालय, किशोर गृह से संबंधित अध्ययन।

बी.ए.–3

1. भारतीय जनजातीय समाज का विशद अध्ययन तथा उनकी समस्याओं सामाजिक परिवर्तनों का विश्लेषण।
2. सामाजिक अनुसंधान के प्रमुख पद्वतियों की व्याख्या।
3. सामाजिक सांख्यिकी के अंतर्गत बिंदु रेखीय व चित्रमय प्रदर्शन, माध्य, माध्यिका, बहुलक, सहसंबंध पर सार लेखन।

एम.ए.– प्रथम सेमेस्टर

1. समाजशास्त्र विषय से संबंधित परंपरात्मक विचारकों का अध्ययन।
2. प्राचीन भारत व समकालीन भारत में सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति व स्वरूप।
3. ग्रामीण भारत में पंचायती राज व्यवस्था के फल स्वरूप परिवर्तन का विश्लेषण।

एम.ए.– द्वितीय सेमेस्टर

1. सामाजिक शोध की परिमाणात्मक प्रविधि व सामाजिक सांख्यिकी की अवधारणा।
2. मानव विकास सूचकांक की अवधारणा, पंचवर्षीय योजनाओं का सामाजिक मूल्यांकन।
3. जनजातीय समाज का विश्लेषण तथा उनके समकालीन मुद्दे जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण।
4. कृषक आंदोलन का अध्ययन।

एम.ए.– तृतीय सेमेस्टर

1. प्रमुख समाजशास्त्रीय सिद्वांत– प्रकार्यवाद, संघर्ष का सिद्वांत, संरचनावाद, विनिमय का सिद्वांत।
2. भारत के विभिन्न सामाजिक आंदोलनों का विश्लेषण।
3. भारतीय समाज के अध्ययन हेतु विभिन्न दृष्टिकोण यथा इंडोलॉजिकल, संरचनात्मक, प्रकार्यवाद, मार्क्सवाद, सभ्यतावादी दृष्टिकोण की व्याख्या।
4. उद्योग व समाज के मध्य संबंधों का अध्ययन।
5. अपराध, दंड व सुधार का समाज के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

एम.ए.– चतुर्थ सेमेस्टर

1. आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्वांत, प्रतीकात्मक अंतः क्रियावाद, फिनोमिनोलॉजी, एथनोमेथडोलॉजी, क्रिटिकल थ्योरी, उतर आधुनिकतावाद।
2. पश्चिम में समाजशास्त्र का उद्भव व विकास का अध्ययन।
3. भारतीय उद्योग में मानवीय संबंध, श्रम संघ व भूःमंडलीयकरण का समाज पर प्रभाव तथा अंतर्राष्ट्रीय उद्योग संगठन का अध्ययन।
4. अपराध को रोकने में परिवार, शिक्षा, नैतिकता व समाजिकरण की भूमिका का अध्ययन।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय क्र. दि. राजनांदगांव (छ.ग.)